Open Access
उदयगिरी - बहुभाषिक इतिहास संशोधन पत्रिका
(A Bimonthly, Refereed, & Peer Reviewed Journal of History)
Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India
Journal homepage: https://udayagiri.aaassher.org/
ISSN (Online): 2583-8423
Volume 1, Issue 4, October 2023; Pages 169 – 172
DOI: 10.5281/zenodo.10115317

Original Research Article

महात्मा गांधी और अस्पृश्यता की समस्या

प्रा. डॉ. पवार आर. एस.

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, जयक्रांती कला वरिष्ठ महाविद्यालय, लातूर (वाणिज्य एवं विज्ञान) जिला: लातूर महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: rajabhaupawar27@gmail.com

Received: 13 October, 2023 | Accepted: 25 October, 2023 | Published: 26 October, 2023

बीजशब्द: महात्मा गांधी, अस्पृश्यता

महात्मा गांधी एक राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, विचारक, समाज सुधारक, आचार्य शास्त्री, अर्थशास्त्री तथा एक महान क्रांतिकारक थे।महात्मा गांधी का जन्म २ अक्तुबर सन १८६९ में गुजरात राज्य के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था।उनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। उनके पिता का नाम करमचंद गांधी और माता का नाम पुतलीबाई था। उनके पिता पोरबंदर रियासत के दीवान थे और माता पुरातन विचारों की एक सामान्य महिला थी। महात्मा गांधी के जीवन पर उनकी माता के विचारों का अत्यधिक प्रभाव था। महात्मा गांधी अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करते थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा पोरबंदर में हुई। उन्होंने १८८७ मैं मैट्रिक की परीक्षा पास की। वह एक साधारण छात्र थे। गांधीजी को एक मित्र ने इंग्लैंड जाकर कानून की पढ़ाई करने का सुझाव दिया । १४ सितंबर सन १८८८ में गांधीजी मुंबई से इंग्लैंड चले गए। उनका विवाह १३ वर्ष की अवस्था में कस्तूरबा गांधी से हुआ। महात्मा गांधी 1898 में दक्षिण अफ्रीका गए। वहां वे सन १९१४ तक रहे। वहां उन्होंने भारतीयों को अपमानित करने वाली रंगभेद नीति के विरुद्ध सत्याग्रह आंदोलन किया। इसी दौरान उन्हें जेल भी जाना पड़ा।गांधीजी सन १९१५ में दक्षिण अफ्रीका से मुंबई आए। वहां सर फिरोज शाह मेहता ने उन्हें "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का वीर" कहकर उनका अभिनंदन किया। इस महात्मा के ऊपर रस्किन, थारो, टॉलस्टॉय तथा भारतीय धर्म ग्रंथो का प्रभाव पड़ा है। महात्मा गांधी ने १९२० से १९४७ तक अनेकों आंदोलन का नेतृत्व किया। इनमे असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन प्रमुख है।

महात्मा गांधी एक क्रांतिकारक तथा राजनीतिज्ञ तो थे ही साथ ही वे एक समाज सुधारक भी थे। उन्होंने एक बार कहां था, "मेरा तो दवा है कि भारत के बहुसंख्यक अछूतों का भी मैं प्रतिनिधि हूं। हम चाहते हैं कि अछूतों का एक पृथक

जाति के रूप में वर्गीकरण किया जाए। सिख हमेशा के लिए सिख, मुसलमान हमेशा के लिए मुसलमान और इसाई हमेशा के लिए इसाई रह सकते हैं, लेकिन क्या अछूत भी सदा के लिए अछूत रहेंगे।"[१] स्पष्ट है कि, गांधी जी किसी प्रकार का भेदभाव नहीं मानते थे उनकी नजर में अस्पृश्यता एक पाप है। यह प्रजातंत्र की भावना के विरुद्ध है। अस्पृश्यता के संदर्भ में गांधी जी ने लिखा है कि, "अस्पृश्यता का निवारण स्वर्ण हिंदुओं के लिए एक पश्चाताप है। अछूतों के शुद्धिकरण की नहीं बल्कि ऊंची कहलाने वाली जातियों के शुद्धिकरण की आवश्यकता है। ऐसी कोई बुराई नहीं है, जो केवल अछूतों के लिए विशेष तौर से हो। हमारे अहंकार ने हमको अपनी बुराइयों के प्रति अंधा बना दिया है और हम दलित भाइयों जिनको हम कुचला और दासता में रखा है की, बुराइयों को बड़ा चढाकर कहते हैं। ईश्वर की कृपा और उसके दर्शन किसी जाति या राष्ट्र का एकाधिकार नहीं है। वे सबको जो ईश्वर की भक्ति करते हैं, समान रूप से प्राप्त है । जो धर्म और राष्ट्र, अन्याय, असत्य और अहिंसा में विश्वास रखता है वह इस धरती से मिट जाएगा।"[२] इस प्रकार गांधी जी ने अस्पृश्यता पर चोट की है। प्रेमचंद जी ने अपनी पत्नी शिवरानी देवी से कहा भी था दुनिया में महात्मा गांधी को सबसे बड़ा मानता हूं। गांधीजी यह चाहते थे कि सवर्ण उन व्यवसाययों को अपनाकर ऊंच-नीच के भेदभाव को मिटा सकते हैं। जिनके कारण दुसरा वर्ग तुच्छ करार दे दिया गया । यदि चमड़ा, रंगना, मैला ढोना आदि नीच कर्म है तो बराबरी और भाईचारे के लिए इन कार्यों से परहेज न किया जाए। साथ ही उन अछूत कहे जानेवाले लोगों के साथ उठना बैठना खाना पीना करना ही चाहिये। समस्या का हाल इससे निकल सकता है। महात्मा गांधी का यह विचार सद्भावनात्मक लगता है । डॉ. एन. सिंह के विचार है कि, "यह सच है कि गांधीजी ने भारत में छुआछूत को सबसे बड़ा और सार्थक धक्का दिया। वह समाप्त तो नहीं हुई पूरी तरह चरमरा अवश्य गई। गांधी क्योंकि सुधारनावादी थे, परिवर्तनवादी नहीं वह अछूतों की दशा में परिवर्तन चाहते थे स्थिति में नहीं। अंबेडकर और गांधी में मूलत: यही अंतर है कि अंबेडकर स्थितिमें परिवर्तन के पक्षधर थे।"[3] महात्मा गांधी ने अस्पृश्यता का केवल सैद्धांतिक एवं वैचारिक स्तर पर विरोध नहीं किया अपितु इन कुप्रथाओं के विरुद्ध जनमानस में रहकर कार्य भी किया है। भारतीय समाज का एक विशाल हिस्सा कई शताब्दियों तक वर्णगत और जातिगत उच्चता एवं निम्नता जातीय अहंकार और नियोग्यताओं के बंधन में बंधा रहा अर्थात प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से असमान स्थिति में था।यह असमानता केवल सामाजिक प्रतिष्ठा और परीसंपत्तियों के स्वामित्व तक ही सीमित नहीं थी, अपितू जाति विशेष का सदस्य होने के नाते वह मानव होने के अधिकार से भी वंचित था। इस दृष्टि से अस्पृश्यता निवारण से संबंधित गांधी के विचार व रचनात्मक कार्य महत्वपूर्ण स्वीकार किया जा सकते हैं।

महात्मा गांधी अपने स्वभाव व संस्कार से परिवर्तनवादी नहीं थे। वरना वे एक सुधारनावादी विचारक थे। उन्होंने अस्पृश्यता जैसी कुरीतियों के उन्मूलन के प्रयासों और सामाजिक सुधारो के माध्यम से ही स्वाधीनता प्राप्ति का लक्ष्य निर्धारित किया था। स्वराज की प्रति उनके जीवन का उद्देश्य था, परंतु मनुष्य मनुष्य के बीच व्यापक अंतर है और विषमताओं को भी वे समाप्त करना चाहते थे।उनका कहना था कि, हिंदू समाज का यह कर्तव्य है कि वह अस्पृश्यता को दूर करने के लिए जब तक हिंदू समाज अस्पृश्यता के पाप से मुक्त नहीं होता तब तक स्वराज की स्थापना होना संभव है।"[४] गांधी जी का मानना था कि, सच्चा स्वराज अस्पृश्यता जैसे कोढ के रहते स्थापित नहीं हो सकता। इसी कारण उन्होंने असहयोग आंदोलन के दिनों से लेकर जीवन के अंतिम दिनो तक राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ अस्पृश्यता निवारण और अछुतोंदार के लिए जी जान से प्रयासरत रहे। अस्पृश्यता से संबंधित समस्या का बोध गांधी जी को १२ वर्ष की अल्पायु में ही हो चुका था। उनकी माता उनके घर में सफाई करने वाले मेहतर को तथा स्कूल में अस्पृश्य जाति के सहपाठियों को छूने से मना किया करती थी। उस समय वे अपनी मां के निर्देशो का पालन करते थे। किंतु बड़ा होने पर उन्होंने इस बात का विरोध किया। साथ ही उन्होंने अस्पृश्यता की कड़ी निंदा की। उनका मानना था कि, यदि हिंदू शास्त्रों में अस्पृश्यता का अनुमोदन है तो उनका वे परित्याग करने को भी तैयार है। अस्पृश्यता को उन्होंने हिंदू समाज का कलंक

बताया। उनके विचार से अस्पृश्यता हिंदू धर्म का दूषण है। महात्मा गांधी जी ने वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित समाज व्यवस्था को स्वीकार किया किंतु वे वर्णों के बीच भेदभाव तथा उच्च नीच को मानने को तैयार नहीं थे। मेहतरो के व्यवसाय से जुड़ी हीनता को दूर करने के लिए गांधीजी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपने शौचालय की सफाई करें। उन्होंने कस्तूरबा गांधी से अपने शौचालय की सफाई करवाई तथा आश्रम में रहने वालों को आश्रम की सफाई स्वयं को करने को कहा।गांधी जी ने स्पष्ट कहा कि अपने संतानों के संदर्भ में प्रत्येक व्यक्ति एक मेहतर है।

महात्मा गांधी जी का विचार था कि अस्पृश्यता ईश्वर तथा मनुष्य के प्रति पाप है और इसलिए विषेले नासुर के समान धीरे-धीरे धर्म के मर्मस्थल को खा रहा है। हिंदू धर्म की रक्षा के लिए उन्होंने अस्पृश्यता का उन्मूलन आवश्यक माना । उनका मानना था कि यदि अस्पृश्यता हिंदू धर्म का अभिन्न अंग है, तो हिंदू धर्म अमृतप्राय है।वे अस्पृश्यता को मानवता के विरुद्ध एक जघन्य अपराध मानते थे उनकी दृष्टि से जन्म से कोई मनुष्य अपवित्र नहीं हो सकता, अपवित्रता लोगों की आंतरिक मन स्थिति में निहित होती है।बुरे विचार ही अपवित्र और अस्पृश्यता है। जो ईश्वर से डर कर चलता है। पवित्र तो केवल वही है जो ईश्वर से डर कर चलता है और सेवा करता है। महात्मा गांधी का यह भी मानना था कि अस्पृश्यता विकृति पूर्ण मानसिक सोच है, जो जाति विशेष के सदस्यों के प्रति सक्षम लोगों द्वारा निर्मित कर ली गई है। अस्पृश्यता के प्रति लोगों की मनोवृत्ति परिवर्तित करने के लिए गांधी जी ने दिन प्रतिदिन के जीवन में घटित होने वाली घटनाओं एवं व्यक्तिगत व्यवहारों से संबंधित क्रियाओ के विभिन्न उदाहरण दिए हैं।

महात्मा गांधी जी की दृष्टि से अस्पृश्यों की सेवा एक धार्मिक कर्तव्य है। यह कार्य त्याग एवं तपस्या के द्वारा ही किया जा सकता है। अस्पृश्यों को अपमान पूर्ण स्थिति से छुटकारा दिलाने के लिए उन्होंने अस्पृश्यों के लिए हरिजन नाम दिया था। 'हरिजन' का मतलब है हरि का जन। गांधीजी का यह भी मानना था कि, सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए पशुओं अर्थात सवर्ण और अस्पृश्यता दोनों को अपने व्यवहार व संस्कृति में बदलाव लाना होगा। उनका यह भी मानना था कि, "धर्म से कोई छूत और अछूत नहीं हो जाता। व कर्म से कोई उच-नीच नहीं हो जाता। उन्होंने यहां तक कहा कि, "मैं अस्पृश्यता के अपवित्र धब्बे को बड़ी गहराई से अनुभव करता हूं और मेरा यह ठोस विश्वास है कि, "यदि इस अस्पृश्यता को हिंदू धर्म से पूर्णतया हटाया नहीं गया तो हिंदू धर्म का विनाश सुनिश्चित है। सामाजिक जीवन में वर्ण जाति, राष्ट्र, लिंग, धर्म आदि किसी के आधार पर विषमता नहीं होनी चाहिए, क्योंकि इसके लिए कोई एक व्यक्ति उत्तरदायी नहीं है।"[५] गांधी जी का समाज सुधार कार्यक्रम उनके राजनीतिक कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग था। इस क्षेत्र में उन्होंने हरिजन तथा दलित वर्णों के उद्धार पर बहुत बल दिया है। उनका कहना था कि, "हरिजन उद्धार के लिए हरिजन की अपेक्षा हिंदुओं को ही प्रयत्न करना चाहिए उच्च जातियों के हिंदुओं ने शताब्दियों से हरिजनों पर अत्याचार किए हैं इसलिए उन्हें ही इसको दूर करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।"[६]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि अस्पृश्यता गांधीजी के समाज सुधारक कार्यक्रम में सबसे महत्वपूर्ण विषय रहा है ।उनके भाषणों का विषय अछूतोंदार ही रहा है। गांधी जी ने भेदभाव छूआ-छूत अथवा अस्पृश्यता को हिंदू धर्म पर काला धब्बा बतलाया और उसके निवारण के लिए उन्होंने उपवास तक रखा। महात्मा गांधी जी के विचारों का अनुकरण कर हम हमारे राष्ट्रीय सामाजिक जीवन में व्याप्त हिंसा, घृणा, अविश्वास और अहंकार से आसानी से के साथ छुटकारा पा सकते हैं। आवश्यक ता केवल इस बात की है कि हम उनके विचारों का स्वीकार करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. राजवीर सिंह, समाजशास्त्रीय विचारक, जयपुर प्रकाशन २०१३, पृष्ठ क्रमांक २४५, २४६

२. वहीं, पृष्ठ क्रमांक २४६

३. डॉ. एन.आर.सिंह, मेरा दलित चिंतन, पृष्ठ क्रमांक १०६

४. रोला, रोमा, महात्मा गांधी जीवनी और दर्शन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ क्रमांक ७६

५. डॉ. नीरू रस्तोगी, गांधीवादी कथा शिल्पी श्री अनंत गोपाल शेवडे वैचारिकता के विविध आयाम, ज्ञानोदय प्रकाशन, कानपुर, २०१०, पृष्ठ क्रमांक ११४

६. मुकेश सिंह, महात्मा गांधी, वंदना पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण २०१२, पृष्ठ क्रमांक २३२